सेमेस्टर IV

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit: IV : मूल्यांकन - क्रियात्मक शोध तथा सामुन्नयन कार्य

1. हिन्दी पाठ्य - पुस्तक समीक्षा

a. पाठ्य - पुस्तकों की आवश्यकता
b. पुस्तक - पढ़ने की शिक्षा
c. पाठ्य - पुस्तक क्या है
d. पाठ्य - पुस्तकों के उद्देश्य
e. पाठ्य - पुस्तकों के प्रकार
f. पाठ्य - पुस्तकों के गुण
g. सहायक पुस्तकों के गुण
h. पाठ्य - पुस्तकों का चयन
i. पाठ्य - पुस्तकों के दोष
j. प्रचलित पाठ्य - पुस्तकें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

हिन्दी-शिक्षण में मूल्यांकन की उपयोगिता

हिन्दी भाषा के शिक्षण में भी हमें मूल्यांकन का वह उपयोग दृष्टिगोचर होता है जो अन्य विषयों में है। जब हम भाषा पढ़ाते हैं तो हमारे लिए भाषा के पढ़ाने के उद्देश्यों को निर्धारित करना बहुत ही आवश्यक हो जाता है। शायद हम बहुत कम इस पर विचार करते हैं कि हमारे भाषा पढ़ाने के क्या उद्देश्य हैं—क्या-क्या

---

1. Evaluation-Teaching Approach. 2. Learning Experiences. 3. Behavioural Changes.

Scanned with CamScanner

अथवा कौन-कौन-सी क्षमताएँ हम बालकों को देना चाहते हैं जिनके प्राप्त कर लेने पर हम उनकी जाँच कर सकें और यह कह सकें कि बालकों को भाषा-ज्ञान हो गया है और उन्होंने भाषा सीख ली है; उदाहरण के लिए, हम कह सकते हैं कि बालक की भाषा के माध्यम से अपने विचारों, इच्छाओं व मनोवृत्तियों को अभिव्यक्त करने की क्षमता प्राप्त हो जाये। यह ठीक है और सब स्वीकार करते हैं कि भाषा-शिक्षण का यह उद्देश्य है, परन्तु इसका क्या तात्पर्य है, इस पर हम पर्याप्त विचार नहीं करते। हम कब कह सकते हैं कि बालक को यह क्षमता प्राप्त हो गई। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम अपने प्रत्येक उद्देश्य को बालक के व्यवहार-परिवर्तनों में स्पष्ट करें और यह देखें कि बालक क्या-क्या कर सकता है। तब हम यह कह सकते हैं कि बालक को वह क्षमता प्राप्त हो गई। यदि उपर्युक्त उद्देश्यों को लेकर ही हम चलें और यह निश्चित कर लें कि बालक शुद्ध बोलता है, उसका उच्चारण शुद्ध है, वह अपने स्वर को यथोचित उतार-चढ़ाव दे सकता है, वह शब्दों का प्रयोग ठीक करता है.....आदि, तो हम कह सकते हैं कि उक्त उद्देश्यों की पूर्ति हो गई। इसी प्रकार भाषा के प्रत्येक उद्देश्यों को व्यवहार-परिवर्तन के रूप में समझने की आवश्यकता है तभी हम अपने उद्देश्यों के सम्बन्ध में निश्चित हो सकते हैं।

उद्देश्यों को इस रूप में समझने के उपरान्त हमें सीखने के अनुभवों की व्यवस्था करनी होती है। हम विद्यार्थियों को सीखने के अनुभव इस प्रकार दें कि वे क्रियाशील बनें और क्रिया करते हुए सीखें। सीखने के अनुभव बालकों को क्रियाशील बनाते हैं और बालक ज्ञान प्राप्त करते हुए उसे प्रयोग में लाना भी सीखते हैं। जो ज्ञान प्रयोग में नहीं लाया जा सकता, वह व्यर्थ है।

भाषा में मूल्यांकन बालकों के भाषा सम्बन्धी समस्त ज्ञान की जाँच करता है। शिक्षकों को चाहिए कि वे भाषा-शिक्षण के सम्बन्ध में अपने उद्देश्यों को निर्धारित करें और तत्पश्चात् उनकी व्यवहार- परिवर्तनों के रूप में व्याख्या करके सीखने के अनुभवों का आयोजन करें और फिर ऐसे प्रश्न बनायें जिनसे उनकी पूरी-पूरी जाँच हो सके, तभी मूल्यांकन उचित होगा और बालकों की प्रगति की जाँच के साथ-साथ वह शिक्षकों के लिए भी अपनी कार्यक्षमता की जाँच करने का साधन होगा।

हिन्दी-शिक्षण में मूल्यांकन के क्षेत्र में निम्नलिखित बातें ध्यान देने योग्य हैं—

1. मूल्यांकन व्यापक होना चाहिए जिसमें भाषा के सभी पक्षों एवं योग्यताओं की जाँच की जाये।

2. सैद्धान्तिक विषयों के साथ-साथ विविध अभ्यासात्मक कार्यों तथा व्यावहारिक क्रियाओं का भी मूल्यांकन किया जाये। जैसे—पत्र-पत्रिकाएँ और अतिरिक्त पुस्तकें पढ़ना, पढ़ी हुई विषय-सामग्री पर कक्षा में चर्चा करना, कहानियों एवं कविताओं का संकलन करना, भाषा शिक्षण विषयक श्रव्य-दृश्य उपकरणों का निर्माण करना आदि।

3. मूल्यांकन में मौखिक परीक्षा को भी अनिवार्य रूप से स्थान दिया जाये। मौखिक परीक्षा में सर्वाधिक बल भाषा की शुद्धता और शब्दों के सही प्रयोग पर होना चाहिए।

4. मूल्यांकन सतत् होना चाहिए। प्रत्येक पाठ को पढ़ाने के पश्चात् उसका मूल्यांकन किया जाये। सम्प्राप्ति मूल्यांकन के निष्कर्षों के आधार पर निदानात्मक परीक्षण किया जाये और उपचारात्मक अभ्यास करवाया जाये।

5. भाषिक ज्ञान समुन्नयन और शिक्षण पद्धति के लिए आन्तरिक और बाह्य मूल्यांकन दोनों को यथोचित स्थान दिया जाये। सत्रीय कार्य का मूल्यांकन वर्षभर समान रूप से होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर IV

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit: IV : मूल्यांकन - क्रियात्मक शोध तथा सामुन्नयन कार्य

1. हिन्दी पाठ्य - पुस्तक समीक्षा

a. पाठ्य - पुस्तकों की आवश्यकता
b. पुस्तक - पढ़ने की शिक्षा
c. पाठ्य - पुस्तक क्या है
d. पाठ्य - पुस्तकों के उद्देश्य
e. पाठ्य - पुस्तकों के प्रकार
f. पाठ्य - पुस्तकों के गुण
g. सहायक पुस्तकों के गुण
h. पाठ्य - पुस्तकों का चयन
i. पाठ्य - पुस्तकों के दोष
j. प्रचलित पाठ्य - पुस्तकें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

मूल्यांकन का अर्थ

परीक्षा का उद्देश्य पूर्णरूप से समझने के लिए एक और शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसे मूल्यांकन कहते है। यह शब्द अधिक व्यापक अर्थ देता है और बालक की सामस्त प्रगति की जाँच करने के प्रयोग में आता है। साथ ही साथ यह शिक्षण पर भी अपना प्रभाव डालता है और इसलिए इस पूरी प्रणाली को मूल्यांकन शिक्षण प्रणाली[1] कहते हैं। इसका उद्देश्य परीक्षा में सुधार करने के साथ-साथ शिक्षण विधियों में भी सुधार करना है। इसका आधार यह है कि जितना पढ़ाया गया है उस सबकी जाँच हो और जिसकी जाँच की जाती है वह सब पढ़ाया गया हो। बालकों के सीखने के अनुभव[2] बहुत महत्त्व रखते हैं और यदि उनको उचित अनुभव प्रदान नहीं किये गये तो परीक्षा किसकी होगी ?

दूसरे शब्दों में, हम यह कह सकते हैं कि परीक्षा लेने से पहले हमें ये स्पष्ट हो जाना चाहिए कि किस-किस की परीक्षा लेनी है, कितना ज्ञान किस रूप में बालकों को दिया जा चुका है, जिसकी जाँच करनी है, बालकों में कौन से परिवर्तन हो गये हैं जो उनकी प्रगति के सूचक हैं और हमें परीक्षा के द्वारा यह देखना है कि उनमें ये परिवर्तन हुए भी हैं या नहीं। अगर हो गये हैं तो ठीक है, अगर नहीं हो गये हैं तो क्यों नहीं हुए हैं, इस बात की जानकारी करना आवश्यक है।

यहाँ पर एक शब्दावली को स्पष्ट करना आवश्यक है। शिक्षा का कार्य व्यापक रूप में बालकों में कुछ परिवर्तन लाना है। ये परिवर्तन उनके व्यवहार में तथा उनके आचरण में होंगे। यह स्तर शारीरिक, मानसिक अथवा आत्मिक हो सकता है। व्यवहार-परिवर्तन बिना किसी शिक्षा के नहीं होता। शिक्षा द्वारा बालकों को अनुभव प्राप्त होते हैं और उन अनुभवों के आधार पर वह अपने व्यवहार को बदलता, सुधारता, परिवर्तित व संशोधित करता जाता है। यही नहीं, वह अपने ज्ञान में वृद्धि करता जाता है और अपनी मानसिक शक्तियों का प्रयोग करना, अपना व्यवहार उनसे निर्दिष्ट करता है। ये व्यवहार-परिवर्तन[3] इस बात के सूचक हैं कि अमुक व्यक्ति ने कितनी शिक्षा पाई है।

चूँकि व्यवहार-परिवर्तन सीखने के अनुभवों के आधार पर होते हैं, अतः सीखने के अनुभव प्रमुख हैं। बालकों को ऐसे अनुभव दिये जायें कि उनमें वांछनीय व्यवहार-परिवर्तन हों और वे शिक्षा द्वारा निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति कर सकें।

सीखने के अनुभव उद्देश्यों के ऊपर निर्भर हैं। जब हम बालकों को सीखने के अनुभव देते हैं तो हमें कुछ उद्देश्यों के आधार पर उन अनुभवों को निश्चित करना होता है। इस प्रकार मूल्यांकन शिक्षण प्रणाली एक पूरी शिक्षण प्रणाली का केन्द्र-बिन्दु बन जाती है। आगे दिये हुए त्रिभुज से यह बात व सम्बन्ध स्पष्ट हो जाते हैं।

मूल्यांकन हमें बालकों की प्रगति की जाँच ही नहीं कराता बल्कि इसका संकेत भी देता है कि बालकों को पर्याप्त अनुभव दिये गये हैं अथवा नहीं। साथ ही साथ हमें यह भी स्पष्ट होता है कि हमारे उद्देश्य ठीक हैं अथवा नहीं। उद्देश्य, सीखने के अनुभव व मूल्यांकन तीनों का समन्वय व मिलान ही, मूल्यांकन शिक्षण प्रणाली का सार है। यह प्रणाली शिक्षण का केन्द्र-बिन्दु है और मूल्यांकन शिक्षण का अभिन्न अंग है।

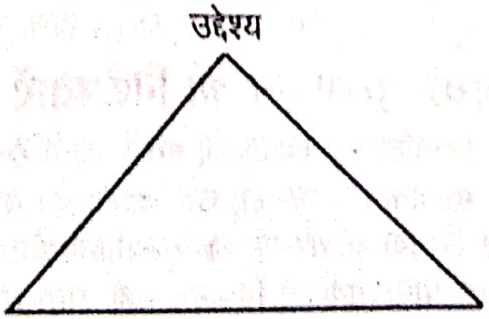

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर IV

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit: IV : मूल्यांकन - क्रियात्मक शोध तथा सामुन्नयन कार्य

1. हिन्दी पाठ्य - पुस्तक समीक्षा

a. पाठ्य - पुस्तकों की आवश्यकता
b. पुस्तक - पढ़ने की शिक्षा
c. पाठ्य - पुस्तक क्या है
d. पाठ्य - पुस्तकों के उद्देश्य
e. पाठ्य - पुस्तकों के प्रकार
f. पाठ्य - पुस्तकों के गुण
g. सहायक पुस्तकों के गुण
h. पाठ्य - पुस्तकों का चयन
i. पाठ्य - पुस्तकों के दोष
j. प्रचलित पाठ्य - पुस्तकें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

प्रश्नों के प्रकार

मूल्यांकन की दृष्टि से प्रश्न तीन प्रकार के होते हैं—

(1) निबन्धात्मक प्रश्न,

(2) लघु उत्तरात्मक प्रश्न,

(3) वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

(1) निबन्धात्मक प्रश्न—आजकल परीक्षाओं में प्रायः जिस प्रकार के प्रश्न आते हैं, वे निबन्धात्मक होते हैं। इन प्रश्नों का बनाना बड़ा सरल होता है। इन प्रश्नों से अभिव्यक्ति और लेखन कौशल की जाँच तो अच्छी तरह हो जाती है, किन्तु इनमें व्यक्तिनिष्ठता अधिक होती है और इनमें उत्तरों में स्पष्टता का भी ध्यान नहीं रखा जाता। "सूर और तुलसी की तुलना कीजिए।" अथवा "सूर की कविता की क्या विशेषताएँ हैं ?" ऐसे ही प्रश्नों के उदाहरण हैं।

(2) लघु उत्तरात्मक प्रश्न—इन प्रश्नों के उत्तर लघु होते हैं और इनमें कुछ स्पष्टता भी होती है। इनसे भाव-प्रकाशन की भी परीक्षा हो जाती है और साथ में निबन्धात्मक प्रश्नों के कुछ दोषों से ये मुक्त भी रहते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में प्रायः दिये जाते हैं। कभी-कभी कुछ प्रश्न अति लघु उत्तरीय होते हैं जिनमें से प्रत्येक का उत्तर एक-दो शब्दों में दिया जाता है। नीचे ऐसे प्रश्नों के कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं—

प्रश्न 1. उन्नति और कृतज्ञ के विलोम शब्द लिखिए।

उत्तर—अवनति, कृतघ्न।

प्रश्न 2. अवधी भाषा में लिखे गये दो महाकाव्यों के नाम बताइये।

उत्तर—रामचरितमानस, पद्मावत।

प्रश्न 3. कृष्ण भक्ति का साहित्य सबसे अधिक किस भाषा में रखा गया है ?

उत्तर—ब्रज भाषा।

प्रश्न 4. ब्रज भाषा के सर्वप्रमुख महाकवि का नाम लिखिये।

उत्तर—सूरदास।

प्रश्न 5. हिन्दी में द्विवेदी युग किसके नाम पर पड़ा है ?

उत्तर—आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी।

प्रश्न 6. पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म कहाँ हुआ था ?

उत्तर—रायबरेली।

प्रश्न 7. चार छायावादी कवियों के नाम लिखिये।

उत्तर—प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी वर्मा।

प्रश्न 8. उद्धवशतक और गोदान के रचियता कौन थे ?

उत्तर—रत्नाकर, प्रेमचन्द्र।

प्रश्न 9. रीतिकाल की रचनाओं में किस रस की प्रधानता थी ?

उत्तर—श्रृंगार।

प्रश्न 10. श्रृंगार के अतिरिक्त दो साहित्यिक रसों के नाम लिखिए।

उत्तर—वीर, रौद्र।

प्रश्न 11. भारत की राजभाषा क्या है ?

उत्तर—हिन्दी।

प्रश्न 12. भारत के कितने राज्य हिन्दी-भाषी हैं ?

उत्तर—दस।

प्रश्न 13. उत्तर-प्रदेश, बिहार, राजस्थान और मध्यप्रदेश के अतिरिक्त हिन्दी भाषी राज्यों के नाम लिखिये।

उत्तर—हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, छत्तीसगढ़, उत्तरांचल और झारखण्ड।

प्रश्न 14. हिन्दी की तीन बोलियों के नाम लिखिये।

उत्तर—बघेली, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 15. तीन शब्दशक्तियों के नाम लिखिये।

उत्तर—अभिधा, लक्षणा, व्यंजना।

प्रश्न 16. मैथिली के सर्वप्रसिद्ध कवि का नाम बताइये।

उत्तर—विद्यापति।

प्रश्न 17. हिन्दी के दो राष्ट्र कवियों के नाम बताइये।

उत्तर—मैथिलीशरण गुप्त तथा रामधारी सिंह दिनकर।

प्रश्न 18. सूर ने किस रस का सर्वोत्तम वर्णन किया है ?

उत्तर—वात्सल्य।

प्रश्न 19. निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखो—

सूर्य, कमल।

उत्तर—**सूर्य**—दिनकर, प्रभाकर, भास्कर।

कमल—सरोज, सरनिज, अम्बुज।

प्रश्न 20. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखो—

पराजय, दुःख, पाप, स्वामी।

उत्तर—क्रमशः विजय, सुख, पाप, दास।

प्रश्न 21. निम्नलिखित ग्रन्थों के रचयिताओं के नाम लिखो—

रामचरितमानस, सूरसागर, प्रियप्रवास, गुंजन।

उत्तर—क्रमशः तुलसीदास, सूरदास, हरिऔध, पन्त।

प्रश्न 22. उस व्यक्ति को तुम क्या कहते हो, जो—

स्कूल में पढ़ाता है, कपड़े सिलता है, रेलगाड़ी चलाता है ?

उत्तर—क्रमशः शिक्षक, दर्जी, ड्राइवर।

(3) वस्तुनिष्ठ प्रश्न—वस्तुनिष्ठ प्रश्न बड़ी सावधानी से बनाये जाते हैं। इनका बनाना कठिन भी है। इनके बनाने में हिन्दी-शिक्षण के उद्देश्यों का ध्यान रखा जाता है। ये निश्चित, स्पष्ट एवं संक्षिप्त उत्तर वाले होते हैं। इनमें विश्वसनीयता व वैधता अधिक होती है, किन्तु इनका सबसे बड़ा दोष यह है कि यह भावाभिव्यक्ति का परीक्षण करने में असमर्थ होते हैं। इन प्रश्नों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं—

प्रश्न 1. निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति दिये हुए शब्दों में से उपयुक्त शब्दों के माध्यम से करो—

(क) साहित्यलहरी (सूर) की रचना है।

(ख) यह (ब्रज) भाषा का ग्रन्थ है।

(ग) निराला की प्रसिद्ध रचना (राम की शक्ति-पूजा) है।

शब्द—तुलसी, सूर, ब्रज, अवधी, श्रीरामचरितमानस, राम की शक्ति-पूजा।

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखो—

(क) तेजी से चलने वाला (द्रुतगामी),

(ख) मन को हरने वाला (मनोहर),

(ग) दो बार जन्म लेने वाला (द्विज),

(घ) जिसकी ग्रीवा सुन्दर हो (सुग्रीव),

(ङ) जो बहुत बोलता हो (वाचाल),

(च) बीता हुआ समय (अतीत),

(छ) सब कुछ जानने वाला (सर्वज्ञ),

(ज) उपकार न मानने वाला (कृतघ्न),

(झ) जिसका कोई आकार न हो (निराकार)।

प्रश्न 3. नीचे तीन कवियों के नाम दिये हैं, उनमें से दो की लिखी दो पुस्तकों का नाम भी दिया है। प्रत्येक पुस्तक के नाम के सामने उसकी रचना करने वाले कवि का नाम लिखो—

कवियों के नाम : जयशंकर प्रसाद, दिनकर, मैथिलीशरण गुप्त।

पुस्तकों के नाम : कामायनी, साकेत।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर IV

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit: IV : मूल्यांकन - क्रियात्मक शोध तथा सामुन्नयन कार्य

1. हिन्दी पाठ्य - पुस्तक समीक्षा

a. पाठ्य - पुस्तकों की आवश्यकता
b. पुस्तक - पढ़ने की शिक्षा
c. पाठ्य - पुस्तक क्या है
d. पाठ्य - पुस्तकों के उद्देश्य
e. पाठ्य - पुस्तकों के प्रकार
f. पाठ्य - पुस्तकों के गुण
g. सहायक पुस्तकों के गुण
h. पाठ्य - पुस्तकों का चयन
i. पाठ्य - पुस्तकों के दोष
j. प्रचलित पाठ्य - पुस्तकें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

अच्छे मूल्यांकन की विशेषताएँ

एक अच्छे मूल्यांकन की प्रायः निम्नलिखित विशेषताएँ बताई जाती हैं—

(1) वैधता—जिस उद्देश्य का मूल्यांकन करना हो, उस उद्देश्य का यदि मूल्यांकन हो जाता है तो उन साधनों को वैध साधन कहा जाता है जिनके आधार पर यह मूल्यांकन होता है।

(2) विश्वसनीयता—छात्रों द्वारा प्राप्त अंकों में विचलन नहीं होता और चाहे जब पुनर्मूल्यांकन किया जाय, अंक प्रायः एक-से रहते हैं।

(3) वस्तुनिष्ठता—परीक्षक की रुचियों, भावनाओं आदि का मूल्यांकन पर प्रभाव नहीं पड़ता। यह पक्षपात रहित होता है। उत्तरों के आधार पर ही मूल्यांकन होता है, न कि परीक्षक के दृष्टिकोण के आधार पर।

(4) व्यापकता—परीक्षा का क्षेत्र संकुचित नहीं होता। पाठ्यक्रम के सम्पूर्ण अंश की परीक्षा हो जाती है।

(5) उपयोगिता—एक अच्छा मूल्यांकन जीवन से सम्बद्ध होता है। यह व्यावहारिक होता है और इसका शिक्षण एवं जीवन में उपयोग किया जा सकता है।

(6) विभेदीकरण—मूल्यांकन को सक्षम और अक्षम छात्रों में भेद कर सकने की सामर्थ्य होनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर IV

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit: IV : मूल्यांकन - क्रियात्मक शोध तथा सामुन्नयन कार्य

1. हिन्दी पाठ्य - पुस्तक समीक्षा

a. पाठ्य - पुस्तकों की आवश्यकता
b. पुस्तक - पढ़ने की शिक्षा
c. पाठ्य - पुस्तक क्या है
d. पाठ्य - पुस्तकों के उद्देश्य
e. पाठ्य - पुस्तकों के प्रकार
f. पाठ्य - पुस्तकों के गुण
g. सहायक पुस्तकों के गुण
h. पाठ्य - पुस्तकों का चयन
i. पाठ्य - पुस्तकों के दोष
j. प्रचलित पाठ्य - पुस्तकें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

सुधार की आवश्यकता

आधुनिक काल में परीक्षा को अधिक उपयोगी साबित करने के लिए उसको वैज्ञानिक ढंग से संगठित करने की प्रकृति जोर पकड़ रही है। साथ ही साथ परीक्षा को दुहराने व उसके मूल्य को अधिक विश्वसनीय बनाने हेतु शिक्षक-वर्ग नई-नई पद्धतियों पर विचार कर रहे हैं। विकल्पों की अधिकता के कारण छात्रों में कुछ अंशों को छोड़ने की जो आदत पड़ जाती है तो उसे छुड़ाने के लिए वैकल्पिक प्रश्नों की संख्या न्यूनतम कर दी जाये। प्रश्न-पत्र में समग्र रूप से दिया जाने वाला विकल्प हटा दिया जाये। कठिनाई का स्तर व शैक्षणिक उद्देश्यों की दृष्टि से मिलते-जुलते दो प्रश्नों के बीच में आन्तरिक विकल्प कम-से-कम संख्या में दिये जायें।

Scanned with CamScanner

केवल बहुत थोड़े निबन्धात्मक प्रश्नों के स्थान पर कुछ लघु उत्तर प्रश्न एवं कुछ वस्तुनिष्ठ प्रश्न भी समाविष्ट किये जायें। इस प्रकार के परिवर्तन के कारण पाठ्यक्रम के अधिकतम अंश और हिन्दी-शिक्षण के प्रायः सभी उद्देश्यों पर प्रश्न पूछे जा सकते हैं। विद्यार्थी प्रश्नों तथा उनके उत्तरों के अपेक्षित विस्तार से परिचित हो सकें। इस उद्देश्य से प्रत्येक प्रश्न के लिए आवश्यक निर्देश स्पष्ट रूप से देने की चेष्टा की जाये। प्रश्नों की कठिनाई का स्तर एवं उनके उत्तर लिखने के लिए आवश्यक समय को ध्यान में रखकर उनके लिए अंक निर्धारित किये जायें। उत्तरों की अंक-योजना स्पष्ट रूप से बनाई जाये। इससे परीक्षकों की स्वेच्छाचारिता के कारण विद्यार्थियों को हानि होने की सम्भावना कम होगी।

शिक्षण व परीक्षण में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। जो कुछ भी सीखा व सिखाया जाता है उसी का परीक्षण किया जाता है। परीक्षण द्वारा ही ज्ञात होता है कि विद्यालय में क्या कुछ पढ़ा-पढ़ाया गया है और कितनी अच्छी तरह से पढ़ा-पढ़ाया गया है। शिक्षक वही बातें विशेष रूप से सिखाते व पढ़ाते हैं और छात्र भी वही बातें विशेष रूप से सीखते व पढ़ते हैं, जिनकी परीक्षा में पूछे जाने की सम्भावना होती है। संक्षेप में परीक्षा प्रणाली की प्रकृति के अनुरूप ही अध्ययन-अध्यापन पद्धतियों का विकास होता है। अध्ययन-अध्यापन पद्धति को सुधारने में परीक्षा प्रणाली बड़ी सहायक सिद्ध होती है।

इस विषय में इतना कह देना आवश्यक है कि कोई भी पुरानी पद्धति इसलिए नहीं त्याग देनी चाहिए कि वह पुरानी है, बल्कि उसके दोषों को दूर कर उसकी अच्छाई को रखना चाहिए और नई पद्धतियों को उसका पूरक बनाकर समूची प्रथा को उपयोगी बनाना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रचलित परीक्षा प्रणाली को नया और उपयोगी रूप देने के लिए यह आवश्यक है कि नई व्यवस्था को स्वीकार किया जाय और उसमें परम्परागत प्रणाली के गुणों व नई प्रणाली के गुणों का सामंजस्य हो। एक अवस्था को बिल्कुल समाप्त कर देना खतरे से खाली न होगा परन्तु इस सबके लिए यह आवश्यक है कि हम अपने उद्देश्यों का उचित निर्धारण करें और देखें कि किस प्रकार की व्याख्या हमारे लिए उन उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो सकती है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर IV

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit: IV : मूल्यांकन - क्रियात्मक शोध तथा सामुन्नयन कार्य

1. हिन्दी पाठ्य - पुस्तक समीक्षा

a. पाठ्य - पुस्तकों की आवश्यकता
b. पुस्तक - पढ़ने की शिक्षा
c. पाठ्य - पुस्तक क्या है
d. पाठ्य - पुस्तकों के उद्देश्य
e. पाठ्य - पुस्तकों के प्रकार
f. पाठ्य - पुस्तकों के गुण
g. सहायक पुस्तकों के गुण
h. पाठ्य - पुस्तकों का चयन
i. पाठ्य - पुस्तकों के दोष
j. प्रचलित पाठ्य - पुस्तकें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

सुधार की आवश्यकता

आधुनिक काल में परीक्षा को अधिक उपयोगी साबित करने के लिए उसको वैज्ञानिक ढंग से संगठित करने की प्रकृति जोर पकड़ रही है। साथ ही साथ परीक्षा को दुहराने व उसके मूल्य को अधिक विश्वसनीय बनाने हेतु शिक्षक-वर्ग नई-नई पद्धतियों पर विचार कर रहे हैं। विकल्पों की अधिकता के कारण छात्रों में कुछ अंशों को छोड़ने की जो आदत पड़ जाती है तो उसे छुड़ाने के लिए वैकल्पिक प्रश्नों की संख्या न्यूनतम कर दी जाये। प्रश्न-पत्र में समग्र रूप से दिया जाने वाला विकल्प हटा दिया जाये। कठिनाई का स्तर व शैक्षणिक उद्देश्यों की दृष्टि से मिलते-जुलते दो प्रश्नों के बीच में आन्तरिक विकल्प कम-से-कम संख्या में दिये जायें।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर IV

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit: IV : मूल्यांकन - क्रियात्मक शोध तथा सामुन्नयन कार्य

1. हिन्दी पाठ्य - पुस्तक समीक्षा

a. पाठ्य - पुस्तकों की आवश्यकता
b. पुस्तक - पढ़ने की शिक्षा
c. पाठ्य - पुस्तक क्या है
d. पाठ्य - पुस्तकों के उद्देश्य
e. पाठ्य - पुस्तकों के प्रकार
f. पाठ्य - पुस्तकों के गुण
g. सहायक पुस्तकों के गुण
h. पाठ्य - पुस्तकों का चयन
i. पाठ्य - पुस्तकों के दोष
j. प्रचलित पाठ्य - पुस्तकें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

उद्देश्य निर्धारण

उद्देश्य निर्धारित करने के लिए किसी भी स्तर पर शिक्षा के किसी भी क्षेत्र में कई बातों का ध्यान रखना पड़ता है। उनमें प्रमुखतः ये हैं—

(अ) बालक की आवश्यकताएँ,
(ब) समाज की आवश्यकताएँ,
(स) शिक्षा-मनोविज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण,
(द) शिक्षा-दर्शन और दार्शनिक दृष्टिकोण,
(य) विशेषज्ञों के मत।

इनके आधार पर ही हम अपने लिए व अपने बालकों के लिए शिक्षा व शिक्षण के उद्देश्य निर्धारित कर सकते हैं। उद्देश्य हवा में लटकने वाले नहीं हैं, उनका निश्चित किया जाना जीवन की विभिन्न परिस्थितियों, मानव की आवश्यकताओं व ज्ञान के क्षेत्र से बँधा हुआ है और उन्हीं की पृष्ठभूमि पर हम उन्हें निश्चित कर सकते हैं। परीक्षा प्रणाली को सुधारने के सम्बन्ध में बात करते समय हमें यह देखना होगा कि हम किसकी परीक्षा ले रहे हैं, किस प्रकार परीक्षा ले रहे हैं, क्यों ले रहे हैं, किन परिणामों की आशा की जाती है और वे परिणाम किन-किन बातों के सूचक हैं। इन सब प्रश्नों का उत्तर दिये बिना हम अपनी परीक्षा प्रणाली को नहीं सुधार सकते।

भाषा-शिक्षण में पाठ्यक्रम के साथ-साथ ही शैक्षणिक उद्देश्यों को भी उचित महत्त्व दिया जा सके इसके लिये आवश्यक है कि अध्यापक हिन्दी शिक्षण के विविध उद्देश्यों व उनकी महत्ता को भली प्रकार समझे। वह इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर पाठ्य-वस्तु को उचित इकाइयों में विभाजित करे। वह पाठ्य-वस्तु की विभिन्न इकाइयों का अध्यापन तत्सम्बन्धी उद्देश्यों को ध्यान में रखकर करे। अध्यापन करते समय उन उद्देश्यों पर बन सकने वाले प्रश्नों के प्रति वह सदैव सजग रहे जिन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किसी विशिष्ट पाठ्य-इकाई का अध्ययन किया जा रहा हो। यदि अध्यापक इतना व्युत्पन्नमति हो कि अध्यापन कार्य करते समय उत्पन्न स्थिति का उपयोग अच्छे प्रश्न बनाने में कर सके, तो अत्यन्त उच्चकोटि के प्रश्नों का निर्माण हो सकता है। एक या दो इकाइयों के अध्यापन के पश्चात् वह नयी पद्धति के अनुसार परीक्षा करे। वह विद्यार्थी की उत्तर-पुस्तिकाओं का सूक्ष्म विश्लेषण करे। इससे यह ज्ञात हो सकेगा कि अपेक्षित उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है। आवश्यकता होने पर अध्यापक कुछ अंशों को पुनः पढ़ाए।

Scanned with CamScanner